Roll No. ..... Total Pages : 6

# 10411/NK

**R–37/2111**

**VEDIC SAHITYAYEN**

Paper–SKTM2101T

Semester–I

(Private)

Time Allowed : 3 Hours] [Maximum Marks : 100

**नोट** : सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

**भाग-क**

1. (क) निम्नलिखित मन्त्रों में से किन्हीं **दो** की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : 5×2=10

(i) यस्य त्री पूर्णा मधुना पदान्य् अक्षीयमाणा स्वधया मदन्ति।
य उ त्रिधातु पृथिवीमुत द्याम् एको दाधार भुवनानि विश्वा।

(ii) राजन्तमध्वराणां गोपामृतस्य दीदिविम्।
वर्धमानं स्वे दमे।।



(iii) बिभ्रदद्रापिं हिरण्ययं वरुणो वस्त निर्णिजम्।
परि स्पशो निषेदिरे।।

(iv) भद्रा अश्वा हरितः सूर्यस्य चित्रा एतग्वा अनुमाद्यासः।
नमस्यन्तो दिव आ पृष्ठमस्थुः परि द्यावापृथिवी यन्ति सद्यः।।

(ख) उपर्युक्त प्रश्न संख्या 1-(क) में दिये 4 मन्त्रों में से किन्हीं **दो** के संहिता पाठ को पद-पाठ में परिवर्तित कीजिए। 2½×2=5

2. (क) निम्नलिखित मन्त्रों में से किन्हीं **दो** की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : 5×2=10

(i) मया सो अन्नमत्ति यो विपश्यति यः प्राणिति य ईं शृणोत्युक्तम्।
अमन्तवो मां त उप क्षियन्ति श्रुधिः श्रुत श्रद्धिव ते वदामि।।

(ii) परिं तृन्धि पणीनामारया हृदया कवे।
अथेमस्मभ्यं रन्धय।।

(iii) इन्द्रज्येष्ठान्बृहदभ्यः पर्वतभ्यः क्षयाँ एभ्यः सुवसि पस्त्यावतः।
यथायथा पतयन्तो एवैव तस्थुः सवितः सवाय ते।।

(iv) वि वृक्षान् हन्त्युत हन्ति रक्षसो विश्वं बिभाय भुवनं महावधात्।
उतानागा ईषते वृष्ण्यावतो यत्यर्जन्यः स्तनयन् हन्ति दुष्कृत।।

(ख) उपर्युक्त प्रश्न संख्या 2-(क) में दिये 4 मन्त्रों में से किन्हीं **दो** के संहिता पाठ को पद-पाठ में परिवर्तित कीजिए। 2½×2=5

## भाग-ख

3. निम्नलिखित मन्त्रों में से किन्हीं **दो** का अनुवाद कीजिए : 5×2=10

(i) सत्यं बृहदृतमुग्रं दीक्षा तपो ब्रह्म पृथिवीं धारयन्ति।
स नो भूतस्य भव्यस्य पत्न्युरुं लोकं पृथिवी नः कृणोतु।।

(ii) विश्वस्वंऽमातरमोषधीनां ध्रुवां भूमिं पृथिवीं धर्मणा धृताम्।
शिवां स्योनामनु चरेमं विश्वहा।।

(iii) यस्यामापः परिचराः समानीरहोरात्रे अप्रसादं क्षरन्ति।
स नो भूमिर्भूरिधारा पयो दुहामथो उक्षतु वर्चसा।।

(iv) यस्याश्चतस्रः प्रदिशः पृथिवव्याः यस्यामन्नं कृष्टः संबभूवुः।
या बिभर्ति बहुधा प्राणदेजत् सा नो भूमिर्गोष्वप्यन्ने दधातु।।

4. निम्नलिखित मन्त्रों में से किसी **एक** की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : 5×1=5

(i) ता नः प्रजाः सं दुहतां समग्रा।
वचा मधु पृथिवी धेहि मह्यम्।।



(ii) यत् ते भूमे विखनामि क्षिप्रं तदपि रोहतु।
म ते मर्म विमृग्वरि मा ते हृदयमर्पिपम्।।

5. निम्नलिखित मन्त्रों में से किन्हीं **दो** की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : 5×2=10

(i) अहमेव वात इव प्र वाम्यारभमाणा भुवनानि विश्वा।
परो दिवा पर एना पृथिव्यैतावती महिना सं बभूव।।

(ii) यस्य व्रते पृथिवी नन्नमीति यस्य व्रत्ते शफवज्जर्भुरीति।
यस्य व्रते औषधीर्विश्वरूपाः सः नः पर्जन्य महि शर्म यच्छ।

(iii) यज्जाग्रतो दूरमुदैति दैवं सुप्तस्य तथैवैति।
दूरङ्गमं ज्योतिषां ज्योतिरेकं तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु।।

(iv) येनेदं भूतं भुवनं भविष्यत् परिग्रहीतममृतेन सर्वम्।
येन यज्ञस्यायते सप्तहोता तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु।।

6. निम्नलिखित मन्त्रों में से किन्हीं **दो** की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : 2½×2=5

(i) त्रिपाद्ध्वं उदैत् पुरुषः पादोऽस्येहाभवत् पुनः।
ततो विष्वङ्व्याक्रामत् साशनातशने अभि।।

(ii) तस्मादूविरालजायत विराजो अधि पुरुषः।
स जातो अत्यरिच्यत पश्चाद् भूमिमथो पुरः।।

(iii) अन्विदनुमते त्वं मन्यासै र्श च नस्कृधि।

क्रत्वेदक्षाय नोहिनुप्रण आयूषि तारिषः।।

(iv) सिनीवालि पृथुष्टुके या देवानामसि स्वसा।

जृषस्व हव्यमाहुतं प्रजों देवि दिदिडिढ नः।।

## भाग-ग

7. निम्नलिखित सभी प्रश्न अनिवार्य हैं तथा इनमें से किन्हीं **दो** का उत्तर संस्कृत में लिखिए: 10×4=40

(i) पृथ्वी सूक्त के आधार पर पृथ्वी की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

(ii) शिवसंकल्प सूक्त के आधार पर मन की कार्य-प्रणाली पर प्रकाश डालिए।

(iii) पृथ्वी सूक्त का महत्त्व प्रतिपादित कीजिए।

(iv) 'वाक् सूक्त' (10.125) के ऋषि तथा इस सूक्त का सार लिखिए।

(v) 'स नो विश्वाहा सुक्रतुरादित्यः सुपथा करत्...'– इस मन्त्र का अर्थ बताइए।

(vi) पुरुष देवता के मन एवं आंखों से किसकी उत्पत्ति हुई?



(vii) 'सूर्य सूक्त' (1.115) के आधार पर सूर्य देवता का संक्षिप्त परिचय दीजिए।

(viii) 'कविक्रतुः' व 'चित्रश्रवस्तमः' विशेषणों का अर्थ एवं इनमें सम्बद्ध देवता बताइए।

(ix) '...पदे परमे मध्व उत्सः'–इस मंत्र का अर्थ एवं इनसे सम्बद्ध देवता बताइए।

(x) 'सविता सूक्त' (4.54) के आधार पर सविता देवता की विशेषताएँ लिखिए।